

UGC Approved Journal No – 40957

(IIJIF) Impact Factor- 4.172

Regd. No. : 1687-2006-2007

ISSN 0974 - 7648

**J I G Y A S A**

**AN INTERDISCIPLINARY REFEREED  
RESEARCH JOURNAL**

**Chief Editor : *Indukant Dixit***

**Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar***

**Editor  
*Reeta Yadav***

---

**Volume XI**

**June 2018**

**No. 2**

---

*Published by*  
**PODDAR FOUNDATION**  
Taranagar Colony  
Chhittupur, BHU, Varanasi  
[www.jigyasabhu.blogspot.com](http://www.jigyasabhu.blogspot.com)  
E-mail : [jigyasabhu@gmail.com](mailto:jigyasabhu@gmail.com)  
Mob. 9415390515, 0542 2366370

## किशोरावस्था में तूफान, संघर्ष एवं तनाव के सन्दर्भ में शिक्षा की आवश्यकता

डॉ. विष्णु कुमार \*  
निर्मला देवी \*\*

प्रस्तावना : 'किशोर' व्यक्ति के जीवन की वह अवस्था है जो बाल्यावस्था की समाप्ति पर प्रारम्भ होती है और प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ होने पर समाप्त होती है। इस अवस्था को लोग 12 से 18 वर्ष तक की आयु में मानते हैं, परन्तु 21 वर्ष तक की आयु को किशोरावस्था माना जाता है।

किशोरावस्था का महत्व व्यक्ति के विकास में अलग है। इस अवस्था के आरम्भ होते ही बालक में अनेक परिवर्तन होने लगते हैं और समझा जाने लगता है कि बालक प्रौढ़ता अथवा परिपक्वता प्राप्त करने लगता है। 'किशोरावस्था का अर्थ परिपक्वता का पाना या बालक का इस योग्य हो जाना कि उसमें प्रजनन की क्षमता उत्पन्न हो जाये।'

किशोरावस्था Adolescence (एडोलसेंस) नाम अंग्रेजी शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। यह शब्द लैटिन भाषा के एन्डोसीयर शब्द से उत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ परिपक्वता की ओर बढ़ना या प्रजनन क्षमता का विकास होना।

परिभाषाएँ—  
कुन्हन के अनुसार, "किशोरावस्था बाल्यकाल तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का परिवर्तन काल है।"  
जरासिल्ड के अनुसार, "किशोरावस्था वह अवस्था है। जिसमें मनुष्य बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है।"  
स्टेनल हॉल के अनुसार, "किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।"

किल पैट्रिक के अनुसार, "किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"  
इसको ज्मद ह्म भी कहा जाता है। यह वह अवस्था है जिसमें बालक स्वयं को बड़ा समझता है और बड़े उसे छोटा समझते हैं। किशोरों का शारीरिक विकास का सर्व श्रेष्ठ काल माना जाता है।

किशोरावस्था के विकास के सिद्धान्त : किशोरावस्था में बालकों और बालिकाओं में क्रान्तिकारी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों के सम्बन्ध में दो सिद्धान्त प्रचलित हैं। यथा—

किशोरावस्था में तूफान, संघर्ष एवं तनाव के सन्दर्भ में शिक्षा की आवश्यकता

1. आकस्मिक विकास का सिद्धान्त— इस सिद्धान्त के समर्थक हैं। उसने 1904 में अपनी 'एडोलेसेन्स' नामक पुस्तक प्रकाशित करने लिखा है कि किशोर में जो भी परिवर्तन दिखाई देते हैं, वे उससे होते हैं और उनका पूर्व अवस्थाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता है और उनका पूर्व अवस्थाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता है और उनका पूर्व अवस्थाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता है और उनका पूर्व अवस्थाओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। वे अकस्मात् होते हैं।

2. क्रमिक विकास का सिद्धान्त— इस सिद्धान्त के समर्थक थार्नडाईक और हालिंगवर्थ हैं। इन विद्वानों का मत है कि किशोरावस्था शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन निरन्तर और क्रमशः इस सम्बन्ध में किंग ने लिखा है, "जिस प्रकार एक ऋतु का आगमन के अन्त में होता है, पर जिस प्रकार पहली ऋतु में ही दूसरे आगमन के चिन्ह दिखाई देने लगते हैं। उसी प्रकार बाल्यावस्था किशोरावस्था एक-दूसरे से सम्बन्धित रहती है।"

किशोरावस्था की मुख्य विशेषताएँ—

किशोरावस्था को दबाव, तनाव एवं तूफान की अवस्था है। इस अवस्था की विशेषताओं को एक शब्द 'परिवर्तन' में व्यक्त किया जा सकता है।

विग व हण्ट के शब्दों में, 'किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम व्यक्त करने वाला एक शब्द है 'परिवर्तन'। परिवर्तन शारीरिक, और मनोवैज्ञानिक होता है।"

जिन परिवर्तनों की ओर ऊपर संकेत किया गया है सम्बन्धित विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

1. शारीरिक विकास— किशोरावस्था को शारीरिक विकास का सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इस काल में किशोर के शरीर में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। जैसे— भार और लम्बाई में वृद्धि, मौसपेशियों और शारीरिक दृढ़ता, किशोर में दाढ़ी और मूँछ की रोमावालिओं एवं किशोरियों मासिक स्त्राव के दर्शन।

कॉलसनिक के अनुसार, "किशोरों और किशोरियों दोनों शरीर और स्वास्थ्य की विशेष चिन्ता रहती है। किशोरों के लिए स्वास्थ्य आर उत्साही बनना एवं किशोरियों के लिए अपनी आवृत्ति जातिय आकर्षण प्रदान करना महत्वपूर्ण होता है।"

2. मानसिक विकास— किशोर के मस्तिष्क का लगभग सभी दिग्ग विकास होता है। उसमें विशेष रूप से अग्रलिखित मानसिक गुण पाए जाते हैं— उसमें विशेष रूप से अग्रलिखित मानसिक गुण पाये जाते हैं— और दिवास्वप्नों की बहुलता, बुद्धि का अधिकतम विकास, सोचने-